वैश्वीकरण का भारत पर प्रभाव

डॉ. एस.एल. साहू
प्राध्यापक - वाणिज्य
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का समन्वय किया जाता है, ताकि वस्तुओं एवं सेवाओं, तकनीकी, पूँजी और श्रम का निर्बाध प्रवाह हो सके। अतः अर्थशास्त्रियों के अनुसार वैश्वीकरण के चार अंग है :-

(1) व्यापार अवरोधों (Trade barriers) को कम करना ताकि वस्तुओं एवं सेवाओं का बेरोक-टोक आदान-प्रदान हो सके।

(2) ऐसी परिस्थिति कायम करना जिसमें विश्व के विभिन्न देशों में पूँजी का स्वतंत्र रूप से प्रवाह हो सके।

(3) ऐसा वातावरण कायम करना कि तकनीकी का निर्बाध प्रवाह हो सके, और

(4) ऐसा वातावरण तैयार करना जिसमें विश्व के विभिन्न देशों में श्रम का निर्बाध प्रवाह हो सके।

वैश्वीकरण के समर्थक विकसित देशों द्वारा वैश्वीकरण की परिभाषा को पहले तीन अंगों तक सीमित कर देते हैं। विकासशील देशों के अर्थशास्त्रियों का मत है कि समस्त विश्व को एक सार्वभौम ग्राम (Global Village) के रूप में कल्पित किया जाए एवं इसके चौथे अंग अर्थात श्रम के निर्बाध प्रवाह की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इस विषय पर विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर वाद-विवाद किया गया है, परन्तु श्रम-प्रवाहों की पूर्णतया उपेक्षा की गयी।

वैश्वीकरण के सामाजिक आयाम पर विश्व आयोग (World Commission) ने विश्व भर में वैश्वीकरण के अनुभव पर स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है : वैश्वीकरण का मौजूदा मार्ग बदलना होगा । इससे वहुत थोड़े लोगों को लाभ होता है। विश्व स्तर पर वैश्वीकरण का प्रभाव निम्नलिखित है।

(1) उत्पादन में वृद्धि -

वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं एवं सेवाओं के व्यापार का विस्तार करना है। इस संदर्भ में विश्व आयोग ने कहा है कि ''यह व्यापार विस्तार सभी देशों में समान रूप से नहीं हुआ है और इसका अधिकतर लाभ औद्योगीकृत देशों को प्राप्त हुआ है। तालिका-1 विश्व के चुने हुए देशों में उत्पादन में वृद्धि को दर्शाती है।

तालिका क्र.-1

विश्व के चुने हुए देशों में उत्पादन में वृद्धि

(औसत वार्षिक वृद्धि प्रतिशत में)

सरल क्र.	देश	सकल घरेलू उत्पाद		कृषि		उद्योग		सेवायें	
		1990-2000	2000-2016	1990-2000	2000-2016	1990-2000	2000-2016	1990-2000	2000-2016
01	आस्ट्रेलिया	3.6	3.0	3.5	1.8	2.7	2.9	3.9	3.1
02	बंगलादेश	4.7	6.0	2.6	4.3	7.3	8.2	4.2	5.8
03	कनाडा	3.0	1.9	NA	3.0	NA	1.2	NA	2.0
04	चीन	10.6	9.9	4.0	4.2	13.7	10.7	10.3	10.5
05	डेनमार्क	2.8	0.8	4.9	0.6	2.6	-0.6	2.7	1.2
06	फ्रांस	2.0	1.1	2.2	0.4	1.2	0.0	2.3	1.4
07	जर्मनी	1.7	1.2	-4.0	-1.'7	-0.1	1.3	2.7	1.2
08	भारत	6.0	7.5	3.2	3.3	6.1	7.6	9.0	9.6
09	जापान	1.3	0.7	0.4	-1.7	0.8	0.2	1.6	0.7
10	मलेशिया	7.0	4.9	0.3	2.8	7.8	2.6	9.0	7.4
11	नेपाल	4.9	4.1	2.5	3.2	7.1	2.7	6.0	4.8
12	नार्वे	3.9	1.5	2.6	3.9	3.9	-0.5	3.7	2.6
13	पाकिस्तान	3.8	4.2	4.4	2.9	4.1	4.9	4.4	4.8
14	दक्षिण अफ्रीका	2.1	3.0	1.0	2.2	0.8	1.6	3.0	3.8
15	श्रीलंका	5.3	6.0	1.6	3.8	6.7	6.2	5.7	6.5

Source-World Development Indicators.Growth of Output-World bank National Accounts Data.

उपरोक्त तालिका क्र.-1 से स्पष्ट है कि वैश्वीकरण से चीन को सबसे अधिक लाभ हुआ है, क्योंकि सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 1990-2000 के बीच सर्वाधिक 10.6 प्रतिशत है, और सेवाओं में 10.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत में भी सकल घरेलू उत्पाद में 2000-2016 के बीच 7.5 प्रतिशत और सेवाओं में 9.6 प्रतिशत की वृद्धि है नेपाल, पाकिस्तान, नार्वे, दक्षिण अफ्रीका की वृद्धि दर बहुत कम है।

(2) उत्पादों का निर्यात - (Export of Products)

भारत में 1947-48 और 1950-51 के बीच निर्यात नीति का आधार दो मुख्य बातें थीं। (1) दुर्लभ विदेशी मुद्रा की प्राप्ति को अधिकतम करना (2) जब तक घरेलू मांग को पूरा न किया जाए तब तक निर्यात नहीं किया जायेगा। इस अवधि के दौरान निर्यात नीति प्रतिबन्धात्मक की दूसरी योजना में यह कहा गया कि भारत को निर्यात से प्राप्त होने वाली आय 3 प्रमुख वस्तुओं चाय, पटसन और कपड़ा पर ही निर्भर है, तथा इन

पदार्थों को स्वदेशी प्रतियोगिता का सामना भी करना पड़ता है, इसलिए निर्यात में वृद्धि आवश्यक है। 1962 में मुदलियार समिति ने निर्यातों को प्रोत्साहित करने हेतु कई महत्वपूर्ण सिफारिशें की। कच्चे माल की अधिक उपलब्धि, आयकर में छूट तथा निर्यातकों को उनके निर्यात से प्राप्त अर्जित विदेशी मुद्रा के एक भाग को अपने उद्योग के विकास के लिए आवश्यक कच्चा माल तथा मशीनरी आयात के लिए आयात लाइसेंस जारी किये गये। 1 जुलाई 1999 से मुक्त व्यापार क्षेत्र (Free Trade Zone) की अवधारणा को कार्यान्वित किया गया जिसे बाद में विशेष आर्थिक क्षेत्र (Special Economic Zone) नाम दिया गया जिसमें कई निर्यात प्रोत्साहन योजनायें लागू की गई। तालिका-2 में विश्व के चुने हुए देशों में उत्पादों का निर्यात दर्शाया गया है।

तालिका- क्र. 2

विश्व के चुने हुए देशों में उत्पादों का निर्यात

(मिलियन डालर में)

सरल क्र.	देश का नाम	2005	2016
1	आस्ट्रेलिया	106097	190271
2	बंगलादेश	9297	94966
3	कनाडा	360475	390117
4	चीन	761953	2098161
5	डेनमार्क	85121	95193
6	फ्रांस	463428	501263
7	जर्मनी	970914	1339647
8	भारत	99616	264020
9	जापान	594941	644933
10	मलेशिया	141626	189414
11	नेपाल	863	740
12	नार्वे	103759	89963
13	पाकिस्तान	16051	20435
14	दक्षिण अफ्रीका	51626	75091
15	श्रीलंका	6347	10340
16	संयुक्त राज्य अमेरिका	901082	1504914

Source-World Development Indicators.Structure of Merchandise Exports,World Trade Organation.

उपरोक्त तालिका-2 से स्पष्ट है कि उत्पादों के निर्यात में चीन प्रथम स्थान पर है, जिसका निर्यात 2005 में 7,61,953 मिलियन डालर था जो 2016 में बढ़कर 20,98,161 डालर की रिकार्ड उँचाई को प्राप्त किया है। जिसका कारण निर्यात को सर्वाधिक प्राथमिकता देना है। 2016 में चीन द्वारा जो निर्यात किया गया है, उसमें खाद्य पदार्थों का निर्यात 2.8 प्रतिशत, कृषि उत्पन्न वस्तुयें 0.4 प्रतिशत, ईंधन 1.2 प्रतिशत, धातु 1.2

प्रतिशत, कारखानों में निर्मित उत्पाद 94.3 प्रतिशत है। इससे यह ज्ञात होता है कि चीन द्वारा औद्योगीकरण को और निर्मित उत्पाद के निर्यात को सर्वाधिक प्रोत्साहन दिया गया है। भारत में 2005 में जो निर्यात 99,616 मिलियन डालर था 2016 में बढ़कर 2,64,020 मिलियन डालर हो गया है, जिसमें खाद्य पदार्थ 11.3 प्रतिशत, कृषि उत्पन्न वस्तुयें 1.4 प्रतिशत, ईंधन 10.8 प्रतिशत, धातु 3.1 प्रतिशत और कारखानों में निर्मित उत्पाद 73.1 प्रतिशत है।

(3) सेवाओं का निर्यात (Service Exports) -

सेवाओं के निर्यात में वाणिज्यिक सेवायें, परिवहन, यात्र, बीमा एवं वित्तीय सेवायें, कम्प्यूटर सूचनायें आदि को शामिल किया गया है। तालिका-3 में विश्व के चुने हुए देशों में सेवाओं के निर्यात को दर्शाया गया है।

तालिका क्र.-3

विश्व के चुने हुए देशों में सेवाओं का निर्यात

(मिलियन डालर में)

सरल क.	देश का नाम	2005	2016
1	आस्ट्रेलिया	29957	52447
2	बंगलादेश	651	1665
3	कनाडा	58905	79796
4	चीन	77974	207192
5	डेनमार्क	43371	58412
6	फ्रांस	152417	235573
7	जर्मनी	153049	276257
8	भारत	51851	155717
9	जापान	99626	168734
10	मलेशिया	19637	34582
11	नेपाल	271	1060
12	नार्वे	29649	36364
13	पाकिस्तान	2029	3344
14	दक्षिण अफ्रीका	11570	13973
15	श्रीलंका	1519	6366
16	संयुक्त राज्य अमेरिका	357422	732551

Source-World Development Indicators.Structure of service Exports International Monetary Fund,Balance Of Payment Statistic Yearbook.

उपरोक्त तालिका 3 से स्पष्ट है कि सेवाओं के निर्यात में सेवाओं के निर्यात में संयुक्त राज्य अमेरिका प्रथम स्थान पर है। वर्ष 2016 में कुल सेवाओं के निर्यात का परिवहन सेवायें 12 प्रतिशत, यात्री सेवायें 28 प्रतिशत, बीमा एवं वित्तीय सेवायें 16 प्रतिशत तथा कम्प्यूटर सूचना संचार एवं अन्य वाणिज्यिक सेवायें 45 प्रतिशत रही है। भारत में सेवाओं का निर्यात जो 2005 में 51851 मिलियन डालर था 2016 में बढ़कर

1,55,717 मिलियन डालर हो गया जो तीन गुनी से भी अधिक वृद्धि है। वर्ष 2016 में कुल सेवाओं के निर्यात का 9 प्रतिशत परिवहन सेवायें 13 प्रतिशत यात्री सेवायें, बीमा एवं वित्तीय सेवायें 5 प्रतिशत तथा 73 प्रतिशत कम्प्यूटर सूचनायें एवं अन्य वाणिज्यिक सेवायें है, अर्थात् भारत में सूचना तकनीकी सेवाओं का सर्वाधिक निर्यात हुआ है।

(4) राष्ट्रीय आय (National Income) -

राष्ट्रीय आय सांख्यिकी देश के सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का एक वृहत रूप प्रदर्शित करती है, साथ ही साथ जनसंख्या के विभिन्न वर्गो, जो उत्पादक एवं आय प्राप्तकर्ता के रूप में इसमें भागीदार होते हैं, इनकी स्थिति भी स्पष्ट होती है। राष्ट्रीय आय अर्थव्यवस्था में मूलभूत परिवर्तनों की ओर इंगित करती है, तथा भविष्य में परिवर्तन की प्रवृत्तियों को भी दर्शाती है। तालिका-4 में विश्व के चुने हुए देशों की राष्ट्रीय आय को दर्शाया गया है।

तालिका क्र.-4

विश्व के चुने हुए देशों की राष्ट्रीय आय

(बिलियन डालर में)

सरल क.	देश का नाम	2015	2000 से 2015 में औसत वार्षिक वृद्धि
1	आस्ट्रेलिया	13175	3.0%
2	बंगलादेश	207.7	6.3%
3	कनाडा	1528.9	2.0%
4	चीन	11018.6	छ।
5	डेनमार्क	311.4	1.1%
6	फ्रांस	2458.2	1.1%
7	जर्मनी	3436.8	1.4%
8	भारत	2087.1	7.5%
9	जापान	4549.0	0.8%
10	मलेशिया	288.0	5.2%
11	नेपाल	21.7	4.3%
12	नार्वे	406.1	1.7%
13	पाकिस्तान	287.6	4.6%
14	दक्षिण अफ्रीका	395.5	3.2%
15	श्रीलंका	78.5	6.00%
16	संयुक्त राज्य अमेरिका	1849.0	1.7%

Source - World Development Indicators, Measures of National Income, World Bank National Account Data.

ISSN 2395-051X

उपरोक्त तालिका क्र-5 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक राष्ट्रीय आय संयुक्त राज्य अमेरिका की 18449.0 मिलियन डालर है किन्तु औसत वार्षिक वृद्धि दर 1.7 प्रतिशत ही है। भारत की राष्ट्रीय आय 2087.1 बिलियन डालर है किन्तु वार्षिक वृद्धि दर सर्वाधिक 7.5 प्रतिशत है।

(5) चालू खाते पर भुगतान शेष (Balance of Payment of Current Account)

निर्यात और आयात का अंतर व्यापार शेष होता है तथा व्यापार शेष में अदृश्य मदों (Invisible Items) से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय को जोड़ दिया जाता है, जिसे चालू खाते पर भुगतान शेष कहा जाता है। तालिका क्र.- 5 में विश्व के चुने हुए देशों के चालू खाते पर भुगतान शेष दर्शाया गया है।

तालिका क्र. - 5

विश्व के चुने हुए देशों के चालू खाते पर भुगतान शेष

(मिलियन डालर में)

सरल क्र.	देश का नाम	2005	2016
1	आस्ट्रेलिया	-43343	-32893
2	बंगलादेश	508	2667
3	कनाडा	21931	-51195
4	चीन	132378	196380
5	डेनमार्क	11104	24837
6	फ्रांस	-137	-22749
7	जर्मनी	131661	289159
8	भारत	-10284	-22457
9	जापान	170123	187265
10	मलेशिया	19980	8960
11	नेपाल	153	2447
12	नार्वे	49967	18069
13	पाकिस्तान	-3606	-1603
14	दक्षिण अफ्रीका	-8015	-9479
15	श्रीलंका	-650	-2009
16	संयुक्त राज्य अमेरिका	-745445	-481210

Source - World Development Indicators, Balance of Payment Current Account, International monetary Fund Statistics.

उपरोक्त तालिका क्र.5 से स्पष्ट है कि चालू खाते पर भुगतान शेष सबसे अच्छा प्रथम स्थान पर जर्मनी का है जो 2005 में 131661 मिलियन डालर था जो बढ़कर 2016 में 289159 मिलियन डालर हो गया जो 119.62 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि है। द्वितीय स्थान पर चीन है जो 2005 में 132378 मिलियन डालर था जो 2016 में वढ़कर 196380 मिलियन डालर हो गया जिसकी वृद्धि पर 48.34 प्रतिशत है । भारत का चालू खाते पर भुगतान शेष 2005 में (-) 10284 मिलियन डालर था जो 2016 में (-) 22457 मिलियन डालर हो

गया जो ऋणात्मक वृद्धि दर 118.36 प्रतिशत है जो अत्यधिक निराशाजनक है। भारत में ऋणात्मक वृद्धि का कारण आयात में बहुत ज्यादा वृद्धि है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, किन्तु कभी प्याज, कभी दालें कभी चीनी और कभी खाद्य तेल का आयात करना पड़ता है। कृषि उपजों को आयात करने का कारण कृषि का पिछड़ापन अपर्याप्त भण्डारण व्यवस्था, कृषि की मानसून पर निर्भरता और दोषपूर्ण विपणन व्यवस्था है।

निष्कर्ष -

वैश्वीकरण से सभी देशों को लाभ प्राप्त होना चाहिए और समूचे विश्व में सभी लोगों के कल्याण में वृद्धि होनी चाहिए। अविकसित और विकासशील देशों की आर्थिक वृद्धि दर में बढ़ोत्तरी होना चाहिए। निर्धनता में कमी आना चाहिए तथा सामाजिक, आर्थिक समानता आना चाहिए। वैश्वीकरण के लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब-इसके श्रम पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम किया जाये। क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के लिए पिछड़े क्षेत्रों में सामाजिक एवं आर्थिक आधार संरचना के सार्वजनिक उपक्रमों को मजबूत बनाया जाए। कृषि की वृद्धि दरों को लक्षित करना होगा जिसकी अभी तक उपेक्षा की गई है। केवल इस प्रकार का उचित वैश्वीकरण, विकास और रोजगार उत्पन्न करने में सहायक हो सकता है। भारत के सामने उत्पादक रोजगार के साथ विकास की गति तेज करने की चुनौती विद्यमान है। वैश्वीकरण के युग में भारत रोजगार विहिन विकास का अनुभव कर रहा है। भारत के पास इतना बड़ा स्वदेशी बाजार उपलब्ध है कि इसे विकास के लिए विदेशी बाजारों पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु इस क्षमता का लाभ उठाने के लिए प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि आवश्यक है। अतः भारत को रोजगार एवं विकास की वृद्धि दर में साहचर्य प्राप्त करना होगा। विश्व बैंक ने भारत को चीन से भी तीव्र गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बताकर देश के भीतर नई आशा का संचार किया है।